Gyanvividha, Vol.-1; Issue-5 (October-December) 2024 : PP-24-29

ज्ञानविविधा

कला, मानविकी और सामाजिक विज्ञान की सहकर्मी-समीक्षित, मूल्यांकित, त्रैमासिक शोध पत्रिका

**Online ISSN : 3048-4537**
Vol.-1; Issue-5 (Oct.-Dec.) 2024
Page No.- 24-29
©2024 Gyanvividha
www.journal.gyanvividha.com

**डॉ. सुबोध झा**

सहायक प्राध्यापक
(अतिथि संकाय)
राजनीति विज्ञान विभाग
श्री राधा कृष्ण गोयनका कॉलेज
सीतामढ़ी.

Corresponding Author :

**डॉ. सुबोध झा**

सहायक प्राध्यापक
(अतिथि संकाय)
राजनीति विज्ञान विभाग
श्री राधा कृष्ण गोयनका कॉलेज
सीतामढ़ी.

## लोकनायक जयप्रकाश नारायण और सम्पूर्ण क्रान्ति

देश की आजादी की लड़ाई से लेकर वर्ष 1977 तक तमाम आंदोलनों की मशाल थामने वाले जय प्रकाश नारायण का नाम देश के एक ऐसे शख्स के रूप उभरता है जिन्होंने अपने विचारों , दर्शन एवं व्यक्तित्व से देश की दिशा तय की थी । लोकनायक के शब्द को असलियत में चरितार्थ करने वाले जय प्रकाश नारायण समर्पित जननायक एवं मानवतावादी चिंतक तो थे ही इसके साथ – साथ उनकी छवि अत्यंत शालीन और मर्यादित सार्वजनिक जीवन जीने वाले व्यक्ति की भी है । उनके समाजवाद का नारा आज भी हर तरफ गूंज रहा है । लोकनायक जयप्रकाश नारायण ने अपने जन आन्दोलन का लक्ष्य किया था सम्पूर्ण क्रांति । उन्होने अपनी पुस्तक "कारावास की कहानी" में लिखा है क्रान्ति करने की जो तीव्रता मन मे थी वह मुझे मार्क्सवाद की ओर और विनोबा जी की "प्रेम में क्रान्ति की ओर खींच ले गई । विनोबा जी के आन्दोलन में शामिल होने के पूर्व उनके साथ चर्चाएं कर मैं आश्वस्त हो गया था कि उनका लक्ष्य सिर्फ जमीन बाँटना नहीं बल्कि मनुष्य व समाज का पूर्ण परिवर्तन करना है । जिसे मैंने दोहरी क्रान्ति, माननीय क्रान्ति द्वारा सामाजिक क्रान्ति की संज्ञा दी थी लेकिन जब उन्हें महसूस हुआ कि ग्राम-स्वराज्य आन्दोलन से अहिंसक क्रान्ति होने वाली नहीं है तब वे क्रान्ति का दूसरा तरीका ढूंढने लगे । आवश्यकता अविष्कार की जननी है । यह बात लोकनायक जयप्रकाश की सम्पूर्ण क्रान्ति पर भी घटित होती है । इसी दौरान बिहार में छात्र आन्दोलन जोर पकड़ रहा था, छात्रों को ग्रामीण जनता का सहयोग व समर्थन प्राप्त हो रहा था । उपर्युक्त माहौल ने श्री जयप्रकाश नारायण को बिहार के छात्र

आन्दोलन की दिशा को सम्पूर्ण क्रान्ति की ओर मोड़ने के लिए तत्पर किया । 5 जून 1975 को गांधी मैदान (पटना) में आयोजित एक सभा में जब सभी शामिल विपक्षी दल के नेताओं एवं जनसमूह ने सम्पूर्ण क्रान्ति को व्यापक रूप से संघर्ष का लक्ष्य मान लिया एवं समस्त बिहार बोल उठा 'सम्पूर्ण क्रान्ति का नारा है, भावी इतिहास हमारा है[1]

दूसरे शब्दों में एक समाज वैज्ञानिक की दृष्टि से श्री जयप्रकाश नारायण ने अपने पचास वर्षीय सामाजिक जीवन के दौरान जो कुछ देखा, सोचा, समझा व किया वह उनके सम्पूर्ण क्रान्ति की प्रेरक शक्ति थीं । वे समाज और व्यक्ति के जीवन के हर पहलू में कान्तिकारी परिवर्तन चाहते थे ताकि व्यक्ति एवं समाज का विकास हो, दोनों ऊंचा उठे । इसलिए उन्होंने सम्पूर्ण क्रान्ति को समग्र क्रान्ति कहा तथा रचनात्मक एवं सृजनात्मक कार्य द्वारा व्यक्ति व समाज बदलने के लिए लम्बे अर्से तक संघर्ष चलाने और जूझने की बात की । यानि सम्पूर्ण कान्ति को फलीभूत करने हेतु संघर्ष एवं रचना की दोहरी प्रक्रिया क्रमश चलती है[2]। वैसे भी अपनी पुस्तक "कारावास की कहानी" में वे लिखते हैं कि "क्रान्ति शब्द से परिवर्तन एवं नवनिर्माण दोनों ही अभिप्रेत हैं । जगत में यूं तो हर कुछ परिवर्तनशील है । हर कुछ का नित निरन्तर नवीनीकरण भी होता रहता है, तो फिर क्रान्ति या क्रान्तिकारी परिवर्तन से क्या अभिप्रेत है ? एक यह कि क्रान्ति या क्रान्तिकारी परिवर्तन बहुत शीघ्र होता है- कभी-कभी ऐसा कि वस्तु में गुणात्मक परिवर्तन हो जाता है[3]।

संक्षेप में सम्पूर्ण क्रान्ति का उद्देश्य था सम्पूर्ण परिवर्तन अर्थात व्यष्टिगत परिवर्तन एवं समष्टिगत परिवर्तन । वे समाज के सभी अंगों में परिवर्तन कर समता, स्वतंत्रता और भातृत्व भावना के आधार पर नये समाज की रचना के आकांक्षी थे । उनकी मान्यता थी कि सत्ता का हस्तान्तरण जनता के हाथ जाना चाहिए । यानी श्री जयप्रकाश नारायण की सम्पूर्ण क्रान्ति केवल शासन बदलने के लिए नहीं बल्कि समाज व व्यक्ति को बदलने के लिए है । वे सम्पूर्ण क्रान्ति के माध्यम से शासन सत्ता हासिल कर समाज व व्यक्ति को बदलने के लिए प्रयासरत है । वे सम्पूर्ण क्रान्ति के माध्यम से शासन सत्ता हासिल कर समाज परिवर्तन के हिमायती थे । वे चाहते थे सत्ता वैसे ही लोगों के पास जाए जो लोकतांत्रिक मूल्यों में आस्था रखते है एवं समाज परिवर्तन की बात सोचते है । अतः हम कह सकते है कि श्री जवाहर लाल नेहरु की भाँति श्री जयप्रकाश नारायण का सपना नये भारत तक सीमित नहीं था, बल्कि नये समाज तक था । उनकी कल्पना का विस्तार असीम था और उसे साकार करने की दृढ़ता उनके पास थी । अपने सतत् खोज, प्रयोग और परीक्षणों को जारी रखते हुए वे महात्मा गाँधी और विनोबा जी के पास गये । यह सत्य है कि गाँधी के मरणोपरान्त ही श्री जयप्रकाश नारायण उनके विचारों के करीब आये और उनका महत्व समझा । चूंकि विनोबा भी गाँधी के विचारों के मर्मज्ञ थे इसलिए लोकनायक विनोवा के सम्पर्क में आये और समय की मांग पर उनके विचार ग्रहण कर आगे कदम बढ़ाया । वस्तुतः जयप्रकाश नारायण भारत भूमि के सच्चे क्रान्ति पुत्र थे । उनकी सम्पूर्ण यात्रा क्रान्ति यात्रा थी, उनका सम्पूर्ण जीवन दर्शन क्रान्ति दर्शन था । अपने लक्ष्य तक पहुँचने के लिए उन्होंने असंख्य विचारो को

अपनाया यथा समाजवादी विचार, वैज्ञानिक विचार, लोकतांत्रिक विचार व गाँधीवादी विचार आदि और इन सभी विचारों का सम्मिलित प्रभाव उनके चिन्तन पर पड़ा । वे इन विचारों का पाथेय लेकर साम्यवाद, समाजवाद एवं सर्वोदय होते हुए सम्पूर्ण कान्ति तक पहुँचे । उन्होंने देख लिया था कि सम्पूर्ण क्रान्ति के बिना न तो साम्य होगा, न समाज का हित सधेगा और न सर्वसमाज के उदय का लक्ष्य पुरा होगा । सर्वोदय और सम्पूर्ण कान्ति को एक मान लेने से विचार में एक बड़ी कमी रह जाती है । सम्पूर्ण क्रान्ति की प्रक्रिया में वर्तमान और भविष्य के बीच में एक संधिकाल (ट्रैन्जिशन) है जिसके संयोजन का बुनियादी महत्व है । परिवर्तन के क्रम में एक स्थिति से दूसरी स्थिति में इस संधि को छलांग मारकर पार नहीं किया जा सकता । बीच की स्थिति का संयोजन न हो तो क्रान्ति का क्रमिक विकास सम्भव नहीं होगा । सर्वोदय की इस कमी को जयप्रकाश नारायण ने सम्पूर्ण क्रान्ति द्वारा पूरा किया[4] |

उनके अनुसार भारत में जो लोकतंत्र है उसमें कमियाँ और कमजोरियाँ भले ही हो फिर भी उसमें वयस्क मताधिकार है जिसके आधार पर सरकारें बनती है और बदलती है । इसलिए उन्होंने शोषण व दमन के विरुद्ध मूक समुदायों को वाणी दी है । इस तथ्य को सम्पूर्ण क्रान्ति के पहले के सर्वोदय ने समाज परिवर्तन की डाइनामिक्स में जैसे स्थान ही नहीं दिया । यही कारण है कि सर्वोदय वर्तमान और भविष्य को, धरती और क्षितिज को जोड़ने वाला पुल नहीं बन सका । अगर पुल न हो तो इस पार से उस पार जाया कैसे जाय ? सम्पूर्ण क्रान्ति ने वह पुल बना दिया । यह पुल सम्पूर्ण क्रान्ति का आकार और आधार दोनों है । नेहरू, लेनिन और माओ यह पुल नहीं बना सके जिस पर जनता चल सके । लेकिन श्री जयप्रकाश नारायण ने वह पुल बना दिया उनके अनुसार भारत में लोकतंत्र है इसलिए यह पुल बन सकता है । लोकतंत्र न होता तो पुल सम्भव न होता इसलिए लोकतंत्र की उपेक्षा शान्तिमय क्रान्ति के लिए घातक है । यदि लोकतंत्र ही नहीं रह जायेगा तो विचार की शक्ति की सम्भावना ही समाप्त हो जायेगी और उसके समाप्त होते ही मैदान शस्त्र शक्ति के हाथ में चला जायेगा । जो लोकतंत्र और क्रान्ति दोनों को समाप्त कर देगा । गाँधी ने कहा था कि अहिंसा नहीं तो आजादी कैसी, जयप्रकाश ने कहा लोकतंत्र नहीं तो कान्ति कैसी[5] ?

श्री जयप्रकाश नारायण कहते हैं कि यदि लोकतंत्र को कायम रखते हुए एक क्रान्ति को आगे बढ़ाना हो तो परिवर्तन की लड़ाई दो मोर्चों पर साथ-साथ लड़नी पड़ेगी संसदीय मोर्चा और जन मोर्चा (पार्लियामेंट्री फ्रंट और पीपुल्स फ्रंट) जो एक दूसरे के पुरक होंगे । दोनों को मिलाकर लोकतांत्रिक जनक्रांतिक (डेमोक्रेटिक, पीपुल्स रेवोल्यूशन) की यह व्यूह रचना पूरी होगी, जिसके चार पहलू होंगे शिक्षण, संगठन, रचना एव संघर्ष । संघर्ष यह है जिस अंग्रेजी में स्ट्रगल कहते है । स्ट्रगल में टक्कर (कंफ्लिट) जरूरी तब होती है जव लोकतंत्र में उपलब्ध सब तरीके खत्म हो जाये तथा मतदाता के समक्ष डाइरेक्ट एक्शन के सिवाय दूसरा उपाय न रह जाय । लोकतंत्र में सबसे बड़ा हथियार जनमत है – प्रचंड, अजय जनमत । 1974-75 के बिहार आन्दोलन में ऐसे जनमत की शक्ति भरपूर प्रकट हुई थी और उस शक्ति ने तानाशाही का अन्त किया था[6] ।

सम्पूर्ण कान्ति के डाइनामिक्स द्वारा जयप्रकाश नारायण ने लोकतंत्र एवं क्रान्ति की दो बुनियादी समस्याओं का समाधान प्रस्तुत किया-एक, प्रत्यक्ष और परोक्ष परिस्थितियों के बीच पुल तथा दूसरा लोकतंत्र एवं जनक्रान्ति का समन्वय । लोकतंत्र क्रान्तिकारी न हो तो स्थितिबाद होगा, और यदि क्रान्ति लोकतांत्रिक न हो तो अधिनायकवाद होकर रह जायेगी । लोकतंत्र को क्रान्तिकारी तथा क्रान्ति को लोकतांत्रिक बनाना सम्पूर्ण क्रान्ति के सिवाय किसी दूसरी व्यूह रचना में सम्भव नहीं है[7] । अतः जयप्रकाश नारायण जनक्रान्ति द्वारा समाज परिवर्तन का एक ठोस कार्यक्रम समाज के समक्ष रखा और सम्पूर्ण क्रान्ति को सुलभ स्वरूप प्रदान करने हेतु उसके कुछ आयाम निर्धारित किये । इन आयामों में प्रमुख आयाम थे - सामाजिक क्रान्ति, आर्थिक क्रान्ति, राजनीतिक क्रान्ति, वैचारिक क्रान्ति तथा शैक्षणिक क्रान्ति आदि ।

श्री जयप्रकाश नारायण की सामाजिक क्रान्ति का अर्थ व्यापक है । उसका क्षेत्र अति विस्तृत है । उन्होंने सामाजिक क्रान्ति के अन्तर्गत छुआछूत और पर्दा जैसी अन्य मान्यताओं पर ही विचार नहीं किया बल्कि समाज के उन समस्त पहलुओं की भी चर्चा की जिससे समाज की सम्पूर्ण रचना (आर्थिक एवं राजनीतिक) आधारित होती है । समाज की बुराइयों को समाप्त करने की बात कहकर उन्होंने समाज की परम्परागत बुराइयों (जाति प्रथा, छुआछूत आदि) को शामिल करते हुए समस्त ऋणात्मक पहलुओं पर ध्यान दिया । इस प्रकार उनके विचार गांधी, नेहरू और टैगोर के सामाजिक विचार से काफी आगे निकल जाते हैं । गाँधीजी ने राम राज्य की कल्पना की थी, यह कल्पना नैतिक मूल्यों पर आधरित थी लेकिन जयप्रकाश नारायण का ध्यान लक्ष्य पर अधिक था, साध्य उसके लिए महत्वपूर्ण था उन्होंने जातिवाद एवं सम्प्रदायवाद पर गम्भीरता से विचार किया तथा उसके उम्मूलन के लिए अनेक रचनात्मक सूत्र दिए । उनके अनुसार "हरिजन और आदिवासी जनता के जीवन में प्रवेश करना होगा और अपनी सेवाओं से उनका दिल जीतना होगा ।" यह एक ऐसी रचनात्मक सेवा है जिनके विना सम्पूर्ण कान्ति अधूरी रह जायगी । इसी तरह तिलक-दहेज तथा विवाह के कुप्रथाओं के कुप्रभावों से त्रस्त मानवता की सेवा में जयप्रकाश जी ने तनिक भी कमी नहीं की । उनके अनुसार ये कुरीतियों परिवार की प्रतिष्ठा एवं कुल की मर्यादा की अंग बन गयी है । इसके समक्ष कानून विवश है अतः समाज के दिलो दिमाग में गहराई से बैठी इन कुरीतियों को कुचलने और उससे मुक्त होने का कारगर कदम यह है कि घर-घर में युवक और युवतियाँ इसके विरुद्ध विद्रोह का नारा बुलंद करे[8] ।

श्री जयप्रकाश नारायण ने अपने क्रान्ति के क्षेत्र को विस्तृत करते हुए उसमें यांत्रिक क्रान्ति, कृषि कान्ति आदि को शामिल किया । औद्योगिक विकास के लिए वे मध्यम उद्योगों, लघु उद्योगों तथा ग्रामीण उद्योगों के विकास करने की बात की । वे उन तकनीकों को उन्नत किये जाने के हिमायती थे जिनसे ग्रामीण एवं लघु उद्योगों को बल मिले ।

उसके अनुसार भारत कृषि प्रधान देश है जिसका ढांचा सामंतवादी है । अतः भारत की सामंतवादी व्यवस्था समाप्त कर वे गाँधीजी के ट्रस्टीशिप सिद्धांत के आधार पर वास्तविक समता एवं माननीय स्वतंत्रता से समाज रचना चाहते थे[9] ।

लोकतंत्र में श्री जयप्रकाश नारायण की अटूट आस्था थी तथा उनकी राजनीतिक क्रान्ति की सोच के पीछे महात्मा गाँधी के विचारों का स्पष्ट प्रभाव दृष्टिगत होता है "बापू का वह वाक्य स्मरण आता है जिसमें उन्होंने लोकतंत्र की व्याख्या करते हुए कहा था कि इस तंत्र का केवल यह अर्थ नहीं कि जनता के मत से शासन स्थापित हुआ, बल्कि यह भी कि जनता में ऐसी क्षमता भी हो कि वह शासकों को नालायक पाये जाने पर उन्हे पद से हटा सके । उन्होंने वर्तमान लोकतंत्र की त्रुटियों को देखते हुए कहा था आज के लोकतंत्र में बड़ा दोष यह है कि अपने प्रतिनिधियों के लिए उम्मीदवार खड़ा करना और उसका नियंत्रण करना जनता के हाथ में नहीं है । उन्होंने परिस्थितियों के अध्ययन से यह महसूस किया कि भ्रष्टाचार का दायरा बढ़ता जा रहा है, मतदान प्रक्रिया न तो स्वच्छ एवं स्वतंत्र है, न उम्मीदवारों के चयन में मतदाता का हाथ होता है और न चुनाव के बाद अपने प्रतिनिधियों पर जनता का कोई अंकुश रहता है । अतः जयप्रकाश नारायण जी के अनुसार लोकतांत्रिक नैतिकता का तकाजा है कि चुनाव निष्पक्ष व स्वतंत्र हो.....। भ्रष्टाचार, भाई-भतीजावाद, छल कपट और झूठ लोकतंत्र के दुश्मन हैं इसलिए विखण्डित होते लोकतंत्र को बचाने के लिए उन्होंने सम्पूर्ण क्रान्ति को एक अस्त्र माना । किसी आंदोलन को या किसी क्रान्ति को एक गति देने के लिए वैचारिक क्रान्ति का महानतम योगदान होता है । श्री जयप्रकाश नारायण का भी यह विश्वास था कि हर क्रान्ति विचारों में ही बढ़ती है, विचारों से ही उसमें रफ़्तार आती है किसी एक व्यक्ति का विचार कभी भी सम्पूर्ण विचार नहीं होता । हर व्यक्ति की दृष्टि की अपनी विशिष्ट भूमिका देखने की होती है तत्सम्बन्ध में उन्होंने कहा था सम्पूर्ण कान्ति की मेरी कल्पना किसी बने बनाये ढाँचे में नहीं समा सकती । वादो- सिद्धान्तों के कठमुल्लेपन से ऊपर उठना भी अपने आप में वैचारिक पहलू का एक हिस्सा है । किसी एक सिद्धान्त के पास या किसी एक व्यक्ति के पास सारी समस्याओं का हल नहीं हो सकता है ।

श्री जयप्रकाश नारायण ने वर्तमान शिक्षा के पद्धति को गुलामी की शिक्षा एवं कलम घिसने की शिक्षा कहा । चूंकि वर्तमान शिक्षा से ही देश का भविष्य निर्धारित होता है अतः दोषपूर्ण और भ्रष्ट शिक्षा के विरुद्ध आवाज उठाने की आवश्यकता आमूल परिवर्तन के हिमायती श्री जयप्रकाश थे । उनकी राय में छात्र अशांति का कारण सड़ी हुई शिक्षा पद्धति एवं बेरोजगारी से उत्पन्न निराशा व सामाजिक आर्थिक विकास की गलत नीतियाँ है । जय प्रकाश नारायण ने शिक्षा को डिग्रीमुक्त करने का समर्थन किया । वे चाहते थे कि ऐसी शिक्षा दी जाय कि लोगों में काम करने की भावना जागृत हो एवं कर्तव्य का भान हो, समाज में छूआछूत, उँच-नीच का, भेद मिटे तथा शिक्षार्थी को उपाधि की जगह केवल एक प्रमाण-पत्र दिया जाय, जिस पर विद्यार्थी कितने वर्ष महाविद्यालय में रहा, कितने घंटे कक्षाओं में रहा और कितने घंटे दुकानों, कारखानों, दफ्तरों एवं खेतों में काम किया उसका विवरण हो। उसकी योग्यता और कार्य कुशलता को परखने का काम उसके रोजगारदाता को होना चाहिए । अगर किसी विद्यार्थी ने स्वयं अपना काम चलाने की योजना बनायी है तो विश्वविद्यालय और ज्ञान प्राप्त करने के अन्य माध्यम अर्थात कारखाने, कार्यालय या कृषि विशेषज्ञ आदि से आवश्यक ज्ञान एवं कौशल प्राप्त करने में उसकी

सहायता की जाय। इस प्रकार जयप्रकाश नारायण जी के शिक्षा दर्शन विनोबा जी के काफी करीब है । विनोबा जी ने शिक्षा को रोजगारोन्मुख बनाने का विचार प्रकट किया था। यही वजह है कि जयप्रकाश जी सामान्य शिक्षार्थियों के लिए विश्वविद्यालय के शिक्षा को अनुपयोगी बताया। उन्हीं के शब्दों में 'वास्तव में विश्वविद्यालय की शिक्षा तो आवश्यक उन लोगों के लिए है जो कोई विशेष प्रकार का अध्ययन करना चाहते हैं, शोध करना चाहते हैं और जीवन उसमें ही लगाना चाहते हैं ।

इस प्रकार श्री जयप्रकाश नारायण का आक्रोश सम्पूर्ण व्यवस्था से था । उनके सुधार या परिवर्तन की धारणा व्यापक थी तथा उन्होंने हमेशा राज्य सत्ता के बजाय जनसत्ता पर भरोसा किया और इस जनशक्ति के द्वारा ही सामाजिक परिवर्तन एवं निर्माण की समस्या का हल करने का सपना सम्पूर्ण क्रान्ति के माध्यम से देखा लेकिन दुर्भाग्य है कि यह बात जितनी समझी जानी चाहिए उतनी आज भी नहीं समझी जा रही है और उनके ऐतिहासिक प्रयोग को विफल कहा जाता है। जबकि जयप्रकाश नारायण जनक्रान्ति का पूरा विज्ञान व उसके प्रारम्भिक प्रयोग का आधार देकर गये हैं । ऐसे ऐतिहासिक प्रयोग को विफल कैसे कहा जायेगा ? और अगर वह विफल था तो उसकी विफलता ने सफल प्रयोगों के लिए मार्ग प्रशस्त किया । जयप्रकाश नारायण का सम्पूर्ण जीवन एक प्रयोग था, जैसे गाँधी का था वह प्रयोग चलता रहेगा। उस मार्ग पर चलने का साहस और धीरज चाहिए[10] ।

## संदर्भ सूची


1. उमेश चन्द्र उपाध्याय , विचार वल्लरी, कुमार पब्लिशंस, पटना -16, पृ.- 166.
2. जयप्रकाश नारायण, "मैंने जनशक्ति द्वारा ही सामाजिक परिवर्तन व निर्माण का सपना देखा", साप्ताहिक हिन्दुस्तान, 5 मई, 1977.
3. जयप्रकाश नारायण "कारावास की कहानी" सर्व सेवा प्रकाशन, राजघाट, वाराणसी, पृ. - 93-93.
4. आचार्य राममूर्ति "राम प्रवेश शास्त्री की सम्पूर्ण क्रान्ति" पुस्तक के विमोचन समारोह में सर्व सेवा संघ प्रकाशन , राजघाट, वाराणसी 221001 , पृ. – 8.
5. उपरिवत, पृ. – 9.
6. उपरिवत.
7. उपरिवत.
8. जयप्रकाश नारायण "सम्पूर्ण क्रान्ति" सर्वसेवा प्रकाशन राजघाट वाराणसी, पृ.- 59 -60.
9. उमेश चन्द्र उपाध्याय, उपरिवत, पृ.- 169.
10. उपरिवत,पृ.- 171.


•